होते हैं।

- प्रकार्य का सम्बन्ध इकाइयों द्वारा समाज को दिए जाने वाले सकारात्मक योगदान से है।

दुर्खीम का प्रकार्यवाद (Durkheim's Functionalism)

-TOPIC, Sc-102, S.B.Ch
12/08/21

समाजशास्त्र में प्रकार्यवाद (Functionalism) का प्रारम्भ स्पेन्सर से माना जाता है, किन्तु इसे वैज्ञानिक रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय दुर्खीम को है। उन्होंने अपनी रचना "द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी" तथा "द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड" में प्रकार्यवाद की विवेचना की है। इन्होंने समाजशास्त्र में विश्लेषण की विधि को प्रकार्यवाद का नाम दिया है। दुर्खीम के अनुसार, प्रकार्य का अर्थ "किसी भी इकाई द्वारा उससे सम्बन्धित व्यवस्था को बनाए रखने में दिया जाने वाला योगदान है।"

दुर्खीम के कथनानुसार, प्रकार्यात्मक पद्धति का उद्देश्य किसी भी समूह, समाज संगठन और संस्कृति की इकाइयों को ज्ञात कर उनके प्रकार्यों को बताना है।

दुर्खीम का मत है कि प्रकार्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है

1. इसका प्रयोग जीवन देने वाली गतिविधियों की व्यवस्था के रूप में किया जाता है, जिसके परिणामों से कोई तात्पर्य नहीं रहता।
2. दूसरा प्रयोग सम्पूर्ण व्यवस्था में उसकी आवश्यकता के रूप में किया जाता है।

दुर्खीम ने समाज को एक जीवधारी की भाँति माना है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए कुछ आवश्यकताओं; जैसे— हवा पानी की आवश्यक है। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जिन गतिविधियों के द्वारा

- यह गतिशील अवधारणा है।
- समाज में प्रकार्यों की संख्या तय नहीं होती है।
- कभी-कभी प्रकार्य स्पष्ट एवं प्रकट होते हैं, किन्तु कभी-कभी अप्रकट भी होते हैं।
- प्रकार्य का सम्बन्ध इकाइयों द्वारा समाज को दिए जाने वाले सकारात्मक योगदान से है।

दुर्खीम का प्रकार्यवाद (Durkheim's Functionalism)

समाजशास्त्र में प्रकार्यवाद (Functionalism) का प्रारम्भ **स्पेन्सर** से माना जाता है, किन्तु इसे वैज्ञानिक रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय दुर्खीम को है। उन्होंने अपनी रचना "द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी" तथा "द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड" में प्रकार्यवाद की विवेचना की है। इन्होंने समाजशास्त्र में विश्लेषण की विधि को प्रकार्यवाद का नाम दिया है। दुर्खीम के अनुसार, प्रकार्य का अर्थ "किसी भी इकाई द्वारा उससे सम्बन्धित व्यवस्था को बनाए रखने में दिया जाने वाला योगदान है।"

दुर्खीम के कथनानुसार, प्रकार्यात्मक पद्धति का उद्देश्य किसी भी समूह, समाज संगठन और संस्कृति की इकाइयों को ज्ञात कर उनके प्रकार्यों को बताना है।

दुर्खीम का मत है कि प्रकार्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है

1. इसका प्रयोग जीवन देने वाली गतिविधियों की व्यवस्था के रूप में किया जाता है, जिसके परिणामों से कोई तात्पर्य नहीं रहता।
2. दूसरा प्रयोग सम्पूर्ण व्यवस्था में उसकी आवश्यकता के रूप में किया जाता है।

दुर्खीम ने समाज को एक जीवधारी की भाँति माना है। जिस प्रकार शरीर व जीवित रखने के लिए कुछ आवश्यकताओं; जैसे– हवा पानी की प

- यह गतिशील ...
- समाज में प्रकार्यों की संख्या तय नहीं होती है।
- कभी-कभी प्रकार्य स्पष्ट एवं प्रकट होते हैं, किन्तु कभी-कभी अप्रकट भी होते हैं।
- प्रकार्य का सम्बन्ध इकाइयों द्वारा समाज को दिए जाने वाले सकारात्मक योगदान से है।

दुर्खीम का प्रकार्यवाद (Durkheim's Functionalism)

- TOPIC, Sc-102, S.B.Ch 12/08/21

समाजशास्त्र में प्रकार्यवाद (Functionalism) का प्रारम्भ स्पेन्सर से माना जाता है, किन्तु इसे वैज्ञानिक रूप से प्रतिष्ठित करने का श्रेय दुर्खीम को है। उन्होंने अपनी रचना "द डिवीजन ऑफ लेबर इन सोसायटी" तथा "द रूल्स ऑफ सोशियोलॉजिकल मेथड" में प्रकार्यवाद की विवेचना की है। इन्होंने समाजशास्त्र में विश्लेषण की विधि को प्रकार्यवाद का नाम दिया है। दुर्खीम के अनुसार, प्रकार्य का अर्थ "किसी भी इकाई द्वारा उससे सम्बन्धित व्यवस्था को बनाए रखने में दिया जाने वाला योगदान है।"

दुर्खीम के कथनानुसार, प्रकार्यात्मक पद्धति का उद्देश्य किसी भी समूह, समाज संगठन और संस्कृति की इकाइयों को ज्ञात कर उनके प्रकार्यों को बताना है।

दुर्खीम का मत है कि प्रकार्य शब्द का प्रयोग दो अर्थों में किया जाता है

1. इसका प्रयोग जीवन देने वाली गतिविधियों की व्यवस्था के रूप में किया जाता है, जिसके परिणामों से कोई तात्पर्य नहीं रहता।
2. दूसरा प्रयोग सम्पूर्ण व्यवस्था में उसकी आवश्यकता के रूप में किया जाता है।

दुर्खीम ने समाज को एक जीवधारी की भाँति माना है। जिस प्रकार शरीर को जीवित रखने के लिए कुछ आवश्यकताओं; जैसे– हवा पानी की पूर्ति आवश्यक है। समाज की आवश्यकताओं की पूर्ति जिन गतिविधियों के द्वारा होती है, उन्हें ही वह उनका प्रकार्य कहता है। परिवार, धर्म नातेदारी, राजनीतिक संगठन तथा आर्थिक संगठन समाज व्यवस्था को चलाने में अपना जो योगदान